941 (P)
H (32)
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1231
10/71

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 941

891.431 ~~Y596~~
B199B

बलि वेदी पर

"सरदार"

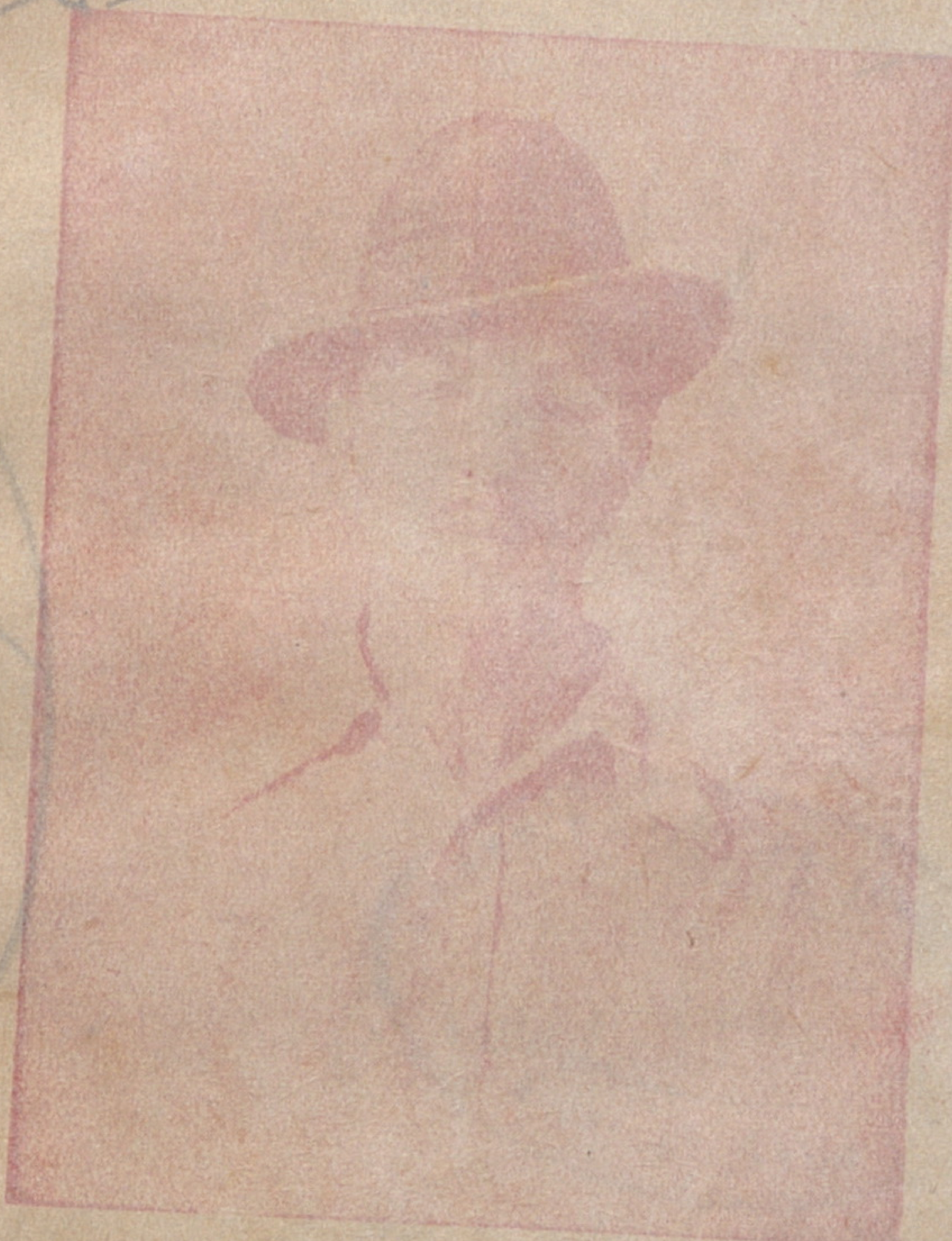

खादिम वही वतन का अपने को जो मिटाये।
शाने वतन हमेशा कुर्बान हो बढ़ाये॥
सर देके ही हमेशा आज़ादियां मिली हैं।
"सरदार" है वही जो सर दार पर चढ़ाये॥

प्रकाशक—"युवक हृदय"

पहिलीबार २०००

मूल्य)

इस पुस्तक के छापने का अधिकार प्रत्येक भारतीय को है।

IMPERIAL RECORD
RECEIVED
8 - AUG. 1931
DEPARTMENT

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 341
Date 27.12.71
GOVT. OF INDIA

मातृ-वन्दना।

वन्दे प्यारी भारत माता।
तुझसे बना रहे निज नाता॥

सजल सफल शीतल सुखकारी, शस्य श्यामला सुरभित सारी।
जग जननी जगदीश दुलारी, जाते सुर-नर- मुनि बलिहारी॥

अखिल विश्व तेरा गुण गाता।
वन्दे प्यारी भारत माता॥

कमला कमल विहरणी तू है, विद्या बुद्धि वितरणी तू है।
भूषित धरणी भरणी तू है, दुर्गा दशकर धरणी तू है॥

प्रलयंकरी शंकरी त्राता।
वन्दे प्यारी भारत माता।

तेरे सुत रण में मतवाले, आये सर से कफ़न सँभाले।
पड़ जायें प्राणों के लाले, किन्तु नहीं वे डिगने वाले॥

कौन तुझे अबला बतलाता।
वन्दे प्यारी भारत-माता॥

तिलक यतीन्द्र लाजपत प्यारे, मां तेरी आंखों के तारे।
अपना सुख रख एक किनारे, बढ़े जहां जलते अंगारे॥

खून शहीदों का रंगलाता।
वन्दे प्यारी भारत-माता॥

मां, वरदे बल से भर जायें, दुश्मन देख कर मत डर जायें।
हंसते हुये चलें मर जायें, बन्धन-मुक्त तुझे कर जायें॥

दिखलाये दुश्मन दहलाता।
वन्दे प्यारी भारत-माता॥

फहराये राष्ट्रीय पताका।

जीवन ज्योति जगाने वाली, निश्चित लगन लगाने वाली।
भव-भय-भूमि भगाने वाली, अमर आग सुलगाने वाली।
स्वाभिमान जीवित जनता का।
फहराये राष्ट्रीय पताका॥

जितना स्वत्व-समर गहराये, उतना यह नभ पर लहराये।
देख इसे धरती मुसकाये, मन में मर मिटने की आये॥
छाये बैरी-वृन्द सनाका।
फहराये राष्ट्रीय पताका॥

माँ पुकारती मुँह मत मोड़ें, फिर आपस के झगड़े छोड़ें।
सब को इसके नीचे जोड़ें, दुर्बलता के बल तोड़ें॥
सूर्योदय हो स्वतन्त्रता का।
फहराये राष्ट्रीय पताका॥

आवें दीन देश के प्यारे, दुखियों की आँखों के तारे।
कर पर अपना सीस सम्हारे, चढ़ जायें वेदी पर सारे॥
चले शहीदों का फिर शाका।
फहराये राष्ट्रीय पताका॥

बढ़ती फ़ौज न रुकने पावे, कभी न तांता चुकने पावे।
जान जा रही हो तो जावे, किन्तु न झण्डा झुकने पावे
मान रहे भारत माता का।
फहराये राष्ट्रीय पताका॥

होशियार।

बिगुल बज गया सुनो होशियार।
जवानो! हो जावो तैय्यार॥
छिड़ा है आज़ादी का जंग, उठो फिर लेकर नई उमंग।
चलो मिल कोटि २ इक संग, देखकर दुश्मन होवे दंग॥
तुम्हीं को ताक रहा संसार।
जवानो! हो जाओ हुशियार॥१
समर का सारा साज संभाल, चलो अब ए! माई के लाल
निडर हो मर कर लो जयमाल, न नत हो भारत भाल विशाल॥
मची है चारों ओर पुकार।
जवानो! हो जावो तैय्यार॥ २
डरो मत मन में कुछ रणधीर, रहेगा अमर न सदा शरीर।
गुलामी की तोड़ो ज़ंजीर, अरे टुक देखो मां की पीर॥
किस लिये चुप बैठे मन मार।
जवानो! हो जावो तैयार॥३
समर फिर आया वर्षों बाद, क्रांति का सुनलो सिंह निनाद।
जियो जग में होकर आज़ाद, या कि फिर हो जावो बरबाद॥
मिटा दो अन्यायी सरकार।
जवानो! हो जावो तैयार॥४
देश के कुछ तो आवो काम, चलो मनी हो तज धन धाम।
लजाओ मत माता का नाम, है गांधी का अन्तिम संग्राम॥

न आयेगा यह बारम्बार ।
जवानो ! हो जाओ तैयार ॥ ५

सुनो सेनापति का आह्वान, निकालो अब अपने अरमान
मचाओ बढ़ २ कर घमसान, चढ़ाओ वेदी पर बलिदान
"खुला है तुम्हें स्वर्ग का द्वार ।
जवानो ! हो जाओ तैयार ॥ ६

ललकार ।

बलि वेदी का द्वार खुला है, भीड़ न कम होने पाये ।
एक एक कर वीरवरों की, टोली अब बढ़ती आये ॥
राष्ट्रसभा(कांग्रेस) की शान न कम हो, चाहे जान चली जाये
गांधी रोड कानपुर को बन, भीषण रणस्थली जाये ।
कितने हैं सच्चे सपूत ? जो मां का दूध चुकाते हैं ।
रण बांकुरे स्वयं सेवक बन, यह अन्याय मिटाते हैं ॥
कितने हैं ? जो नाम लिखाकर ! बढ़कर कीर्ति कमाते हैं ।
जिसका खाया अन्न उसी के, प्रति कर्तव्य निभाते हैं ॥
कौन बंधाता सेहरा सर पर ? आये जौहर दिखलाये ।
राष्ट्र सभा की शान न कम हो, चाहे जान चली जाये ॥ १
देश प्रेम की यह शराब, ढालो २ अब मतवालो ।
विषधर हो फिर एक बार, मचलो अब काले फन वालो ॥
हल डालो इस गवर्नमेंट को, विजय दुश्मनों पर पालो ।
होता बन इस राष्ट्र यज्ञ में, चलो बढ़ो आहुति डालो ।

नाश १ हो नौकर शाही, करनी का फल पा जाये।
राष्ट्र सभा की शान न कम हो, चाहे जान चली जाये॥ २
बने मैमोरियल वैल दूसरा, या जलियांवाला बाग़ बने।
तोपों के मुँह पर सीने या, हाथों में तलवार तने॥
मस्त मनचलों का दल नाचे, महा काल भी घबराये।
दमन दासता चूर चूर हो, शासन का सर कट जाये॥
देश द्रोहियों की छाती भी, टुकड़े २ हो जाये।
राष्ट्रसभा की शान न कम हो, चाहे जान चली जाये॥ ३
कह कर विद्रोही हैं हम, आजादी के दीवाने हैं।
आयें वह मरदाने आयें, जो इस रण में आने हैं॥
निकल पड़ें नवयुवक समय है, उनकी आज परीक्षा है।
गीता का उपदेश यही है, यही देश की इच्छा है॥
चिंता क्या है ? अगर खून की, नदी यहां फिर लहराये।
राष्ट्र सभा की शान न कम हो, चाहे जान चली जाये॥ ४

नौजवानों से

मांगती है माता बलिदान।
जवानो उठो ! देश की जान॥
सो चुके बहुत खो चुके धीर, देखते हुये देश की पीर।
क्यों न हो उठते अधिक अधीर ? गुलामी की तोड़ो जंजीर॥
क्रांति का करो आज आह्वान।
जवानो उठो ! देश की जान॥ १

देश हित बाधा विघ्न ढकेल, चलो अब बढ़कर भर दो जेल ।
सदा ही समझो मरना खेल, चढ़ो फांसी पर संकट झेल ॥
जोश से गाओ गौरव गान ।
जवानो ! उठो देश की जान ॥ २

मर रहे हैं भूखों से लोग, फैलते जाते भीषण रोग ।
भोगते श्रम जीवी दुख भोग, चल रहे हैं झूठे अभियोग ॥
गिर रहा प्यारा हिन्दुस्तान ।
जवानो ! उठो देश की जान ॥ ३

देख लो यह ज़ालिम सरकार, कर रही कठिन वार पर वार ।
सुनो तो तुम्हें रही ललकार, चुनौती करलो अब स्वीकार ॥
हथेली पर रखलो फिर प्रान ।
जवानो उठो देश की जान ॥ ४

बांध लो सर पर कफन संभाल, उठो फिर अब माईके लाल ।
मर मिटो छोड़ो सारे ख़्याल, न नीचा हो भारत का भाल ॥
तुम्हीं तो हो उसके अरमान ।
जवानो ! उठो देश की जान ॥ ५

चलो वीरो अब ठानो ठान, देश पर हो जाओ कुरबान ।
मचाओ फिर ऐसा घमसान, विरोधी लेकर भागें प्रान ॥
हाथ में लेलो लाल निशान ।
जवानो उठो देश की जान ॥ ६

बलिदान १

निपट-निराशा की रजनी में आशा के प्रदीप सुकुमार,
लिये टिमटिमाते हाथों में भटक रहे पागल से चार।
देख दासता-दूषित-दुर्बल--दीन देश का हाहाकार,
सहमें हृदय हिलगया, आंखोंसे निकली आंसूकी धार॥

धँधकी अँतस्तल की ज्वाला,
कठिन हो गया पाना त्राण।
सुख से समरांगण में कूदे,
लिये हथेली पर निज प्राण॥ १

रोका किन्तु नहीं रुकता है, उमड़े नद का प्रबल प्रवाह ?
बन्धन तोड़ मोड़ मुख सुख से, उबल उठा सोया उत्साह।
मंद हास अधरों पर आंखों में अरुहृता की चाह॥
सर से कफन बांध कर आये, सिंह सपूत मुक्ति की राह।

भड़की प्रति हिंसक प्रवृत्तियां,
देख न सके अधिक अंधेर।
हृदय उछलने लगा हर्ष से,
सुनकर बलि वेदी की टेर॥ २

बढ़े रुक गये देखा सम्मुख, काल सयानों का वह खेल।
व्याध स्वत्व जो आये देने, दूर देश से संकट ! झेल॥
किन्तु हुआ उनके आते ही, इस बिखरे समाज में मेल।
यह क्या ? बहिष्कार-! स्वागत के समय हुई बहुतों को जेल॥

ज्वाला जलती हुई रुई से,
रुकी न कुछ फड़के कुछ क्लान्त ।
चिनगारी फूटी पल भर में,
हुये प्रान्त के प्रान्त अशांत ॥ ३

देखो वीर भूमि है जाना, इधर लिखा समुचित सम्मान,
अमिट अक्षरों में अङ्कित है, यहां शहीदों का गुण गान।
मिट्टी के कण २ में मिश्रित, रक्त-राजपूतों की शान,
ठौर ठौर हैं यहां निछावर 'थर्मापोली' के बलिदान ॥

पड़ी ठेस पर ठेस न सोचा,
करते कुछ भी भारी भूल ।
बढ़े सगर्व कुचल कर वे,
पद से प्राचीन कीर्ति के फूल ॥ ४

कैसे सह सकते थे कोमल-दिल पर ऐसे कठिन प्रहार,
पिघल पड़े, हां, रह न सके, जब लखि अमानुसिक अत्याचार ।
सिंहासन हिल गया-शांति-रक्षक सहमे-चौंका संसार,
कोटि २ कंठों को करते देख मूक दुख का प्रतिकार ॥

विषम बेड़ियां बजीं, खुल गये,
बन्दी-ग्रह के बन्द कपाट ।
आये उन्हें रोकने आये,
वे प्रतिनिधि स्वरूप सम्राट ॥ ५

क्यों निर्दय-कायर प्रहार यों, निपट निरस्त्रों पर नादान ?
तीस कोटि हृदयों के स्वामी का ऐसा अनुचित अपमान ।

अरे! वार-पर-वार-मार-उफ! हाथ छोड़ते हैं शैतान,
करते निबलों पर पशुबल के, क्रूर प्रदर्शन पर अभिमान॥

वह देवता स्वरूप 'केशरी'।
अचल रहा बनकर पाषाण॥
वक्षःस्थल पर सहे वार-पर।
मांगा नहीं प्राण का त्राण॥ ६

लो देखते २ फूटा फिर आरत भारत का भाल।
डूबा असमय, सूर्य लुट गया शक्ति हीन हाथों का लाल॥
रोना ही रह गया, न होना कुछ अब, पूछ रहे क्या हाल?
सच कहना क्या क़द्र कहीं भी पाते हैं ग़ुलाम कंगाल?

रे नपुन्सको! कुछ न बनेगा,
है नामर्द क्रोध यह व्यर्थ।
कौन रोक सकता है उनको,
सब प्रकार वे सबल समर्थ॥ ७

देखा नवयुवकों ने देखा, खुले आम यह अत्याचार।
रक्त उतर आया आंखों में, हुआ हृदय पर वज्र प्रहार॥
इन शब्दों के साथ चुनौती, की दीवानों ने स्वीकार।
"कर देंगे हम कील कफ़न की शासन के-उन पर के वार"॥

"या तो मर मिट मुक्त बनेंगे,
तजकर पराधीनता पाश।
या फिर निश्चय कर आयेंगे,
इस नौकर शाही का नाश॥" ८

शासक हँसे नृशंस ऊपरी, मनसे सुन कर सारा हाल।
उतरा देश वासियों के दिल से भी, क्रम क्रम से सब ख्याल ॥
सहसा एक दिवस संध्या को, कान पड़ा कुछ "हुआ कमाल।
जुग जुग जियें पूर्ण प्रण करने वाले वे माई के लाल" ॥

सन्नाटा सा हुआ शत्रु कुल कांपा,
निकल गया 'हा हंत'।
देखा दुष्टों ने दिल दाबे,
अत्याचारी का वह अंत ॥ ६

मौन दिशायें हुईं गुञ्जरित, दिया सुनाई यह संदेश।
पराधीन लोगो उठ बैठो, बुला रहा है पूज्य स्वदेश ॥
देखो अरे मिटाकर सेवक, श्रमजीवी कृषकों के क्लेश।
वह हँसती स्वतंत्रता देवी, करती है फिर पुण्य प्रवेश ॥

समय आगया जौहर करदो,
उठो देखकर अद्भुत ओज।
चले लाल पगड़ी के कुत्ते,
इधर उधर करने को खोज ॥

देखा जिसे देश पर मरते, करते कृषकों का कुछ काम।
या सच्चे स्वराष्ट्र सेवा में ठुकराते वैभव-यश-नाम ॥
बस उसको ही लगे छेड़ने, पीछे पड़कर आठों याम।
झपटे कहीं किसी को काटा, किया किसी का काम तमाम ॥

देख रहे हैं गदर बगावत।
विप्लव साम्यवाद का भूत ॥

इन दुध मुँहे बालकों में भी।
ये पूँजी पतियों के दूत ॥ ११ ॥

हथकड़ियां हिलउठीं सुनपड़ी जंजीरों की मृदु झनकार।
संभली अस्त्र शस्त्र सज्जित हो, एक बार फिरसे सरकार॥
राजद्रोह षड्यन्त्र-क्रान्ति की गली गली में मची पुकार।
तौअबाज़ लेने को दौड़े कर भर कर लेने उपहार॥

दमन दमन का नग्न रूप लखि।
भूलगये सब अपना खेल॥

हँसते चले देखने राधापति की।
जन्म भूमि वह जेल॥ १२

हैं ! यह क्या ? कैसी पुकार है ? मचा हुआ है कैसा शोर।
इधर आरहे हैं ये कैसे मतवाले नव युवक किशोर॥
आज शहीदों का चुनाव था आई सदियों बाद हिलोर।
गाते गीत क्रांति के जाते देखो वे वेदी का ओर॥

हां उन्नत नत मस्तक झांका।
है निश्चय इतनाही ध्यान॥
लड़ते हैं आपस में पहिले।
करने को अपना बलिदान॥ १३

उदय हुए हैं भाव भयानक पुनः जगे हैं जीवन त्याग।
जले हुए हृदयों की आहें, फूंक रहीं अम्बर में आग॥
चले देश के कोने २ में, फिर जलियां वाले बाग़।
बुझने को हैं अमर घरों के ये कुछ जलते हुए चिराग़॥

उठो वीर गण उठो आरती।
लेकर स्वागत करो सहर्ष ॥
मुक्त गुलामी से होने को।
फिर है आरत भारत वर्ष ॥

वीर शहीदों की करनी पर, हंसते होंगे मंगल मूल।
बरसा रहे गगन से देखो, सादर सुर समूह ये फूल ॥
ये रहस्य से भरे न कोई, इनको सकता योंही भूल।
तरुण तपस्वी तर जाते हैं, धर कर इनके पदकी धूल ॥

जिस दिन जहां करेंगे ये सब।
स्वर्ग लोक का चिर-प्रस्थान ॥
वह दिन होगा पर्व और।
होगा वह स्थल तीर्थस्थान ॥१५

चमकेगा दिन दिन चमकेगा, वीरों का निस्पृह बलिदान।
उठासकेगा जगके सम्मुख, फिर सगर्व सिर हिन्दुस्तान ॥
नस नस में बिजली दौड़ेगी, सुनकर इनका गौरवगान।
गर्म खून खौलेगा फड़के गी, फिर शूरों की संतान ॥

पढ़कर यह इतिहास गुलामी का,
सचमुच आवेगा रोष।
देखेंगे दांतो में उंगली दिये,
लोगवह जीवित जोश ॥ १६

क्रांति।

धीरे धीरे सर्व नाश की रौरव रचना रच जाये।
आग लगे इस अखिल विश्व में धुवांधार फिर मच जाये॥
नाशक शासक सहमें सम्राटों के सिंहासन डोलें।
टूटें गद्दियां लुटें खज़ाने चिरबन्दी जीवन खोलें॥
अत्याचार भार भुका हो, फैले ऐसी अमित अशांति।
शांति दूर हो उथल पुथल हो, क्रांति क्रांतिहो भीषणक्रांति॥
अस्त्र शस्त्र सब चल निहत्थों पर, भोलों पर भाले हों।
ऐसा घमासान हो वीरों को, प्राणों के लाले हों॥
धनसत्ता की मान महत्ता, मिट्टी में मिलकर सोवे।
पश्चाताप करे पापों का, पीड़ित राज वंश रोवे॥
गुरुडम का गढ़ नष्ट भ्रष्ट हो खण्ड खण्ड होवे पाखण्ड।
धधके वह विकराल ज्वाल फिर बढ़े क्रांति की वायु प्रचण्ड॥
मचे रक्त की कीच भक्तगण, भमका भेद भाव भूलें।
नौ जवान फांसी के तख्ते पर, हंस हंस कर फूलें॥
बलिदानों का ढेर देखकर, वेदी पर देवी खिलजावे।
हो ऐसी हुँकार द्रोहियों के, दल का दिल हिलजावे॥
विकसे मानवता मनुजों में, दनुजों का होवे संहार।
चेतें चोटों पर चोटें खा, पशुता से प्रमत्त संसार॥३॥
शुभ लोकमत जगे सुखद, नवयुग की नव किरणें फूटें।
नूतन परिवर्तन के नर्तन से, सब के छक्के छूटें॥

उड़े पताका साम्यवाद की, अवनति का पथ खाली हो।
फूली फली पल्लवित वृक्ष, उपवन की डाली डाली हो॥
मिटे अनीति नीति की जय हो, दया धर्म का हो अवतार।
पर्दा फटे खुल पड़े सहसा, बन्द स्वर्ग का सुन्दर द्वार॥४॥

कामना।

जौहर ज्योति भरी मातायें, भेंट करें गोदी के लाल।
इस कंगाल राष्ट्र की देवी, मांग रही है भीख निहाल॥
जगे वीरता की चिनगारी, फिर सोई बहिनें तत्काल।
प्राणों प्यारे भाई भेजें, निजकर से कर मस्तक लाल॥
छिड़ा हुआ है युद्ध भयंकर, प्रलयंकर सैनिक रणसाज।
बढ़ते हैं मर मिटने वाले, रखने को स्वदेश की लाज॥ १
आज शहीदों का चुनाव है, आई सदियों बाद हिलोर।
मतवाले गाते जाते हैं, मिटने बलि वेदी की ओर॥
आज़ादी की लगन लगी है, मचा रहे आपस में शोर।
अज़मालें जी भर कर ज़ालिम भी अब अपना ज़ोर॥
तोप तीर तलवारों के वारों से मांगेंगे मत त्राण।
न्योछावर स्वतंत्रता पर हंस २ कर देंगे निज प्राण॥ २
कठिन परीक्षा का अवसर है, चक्कर में है सब संसार।
जेल कहीं है कहीं निहत्थों पर है गोलों की बौछार॥
भरता जाता घड़ा पाप का बढ़ता जाता अत्याचार।
तुली हुई है मनमानी पर हर प्रकार ज़ालिम सरकार॥

देख रही हैं दांतों उंगली दिये देश द्रोही संतान।
अपनी प्यारी मातृ भूमि पर तपस्वियों का त्याग महान॥ ३
निकले हैं यह निश्चय करके, रणबांकुरे सुभट रणधीर।
या तो भोगेंगे स्वराज्य-सुख या मिट्टी में मिले शरीर॥
देख नहीं सकते हैं अब इन आंखों से माता की पीर।
तोड़ेंगे अवश्य तोड़ेंगे वीर गुलामी की जंजीर॥
चिंता नहीं ज़रा को चाहे मिटे हमारा नाम निशान।
पर स्वतंत्र हो जुग जुग जीवे सदा हमारा हिंदुस्तान॥ ४

वीरों की होली।

आंखों में अल्हड़ता छाये, अधरों पर मस्ती मुसकाये।
रण-भेरी नवजीवन लाये, मन में मर मिटने की आये॥
शूरों ने छाती खोली हो।
वीरो फिर ऐसी होली हो॥ १
ठान देश सेवा की ठाने, पहिन पहिन पहिन केसरिया बाने।
हाथों में झण्डे मरदाने, गाते हुए क्रांति के गाने॥
चली शहीदों की टोली हो।
वीरो फिर ऐसी होली हो॥ २
बढ़ बढ़ कर दुख सुख सब झेलें, सहें समुद्र सीने पर ठेलें।
मरदें फिर जेलों पर जेलें, फांसी के तख्तों पर खेलें॥
डरें न कुछ चलती गोली हो।
वीरो फिर ऐसी होली हो॥ ३

नौजवान जौहर करते हों, काली का खप्पर भरते हों।
वेदी पर हंस २ मरते हों, दुश्मन देख देख डरते हों॥
भूधर फटें भूमि डोली हो।
वीरो फिर ऐसी होलीहो॥ ४

सूर्योदय हो स्वतन्त्रता का, मान रहे भारत माता का।
चले शूर वीरों का शाका, फहराये राष्ट्रीय पताका॥
विजयी बनी बारडोली हो।
वीरो फिर ऐसी होली हो॥ ५

वीर संतान।

हैं हम वीरों की संतान!
सेवा धर्म हमारा प्यारा॥
युक्ति मुक्ति का सुदृढ़ सहारा।
हमने उस पर सब कुछ वारा॥
हँसते हँसते हो जायेंगे, बढ़ बढ़ कर बलिदान।
हैं हम वीरों की सन्तान॥ १

हमें स्वर्ग की चाह नहीं है,
सुख दुख की परवाह नहीं है।
मर मिटने में आह नहीं है॥
यही कामना है दीनों का त्राण करें व्रत ठान।
हैं हम वीरों की सन्तान॥ २

यह अभिमान शान दल छोड़ें,